

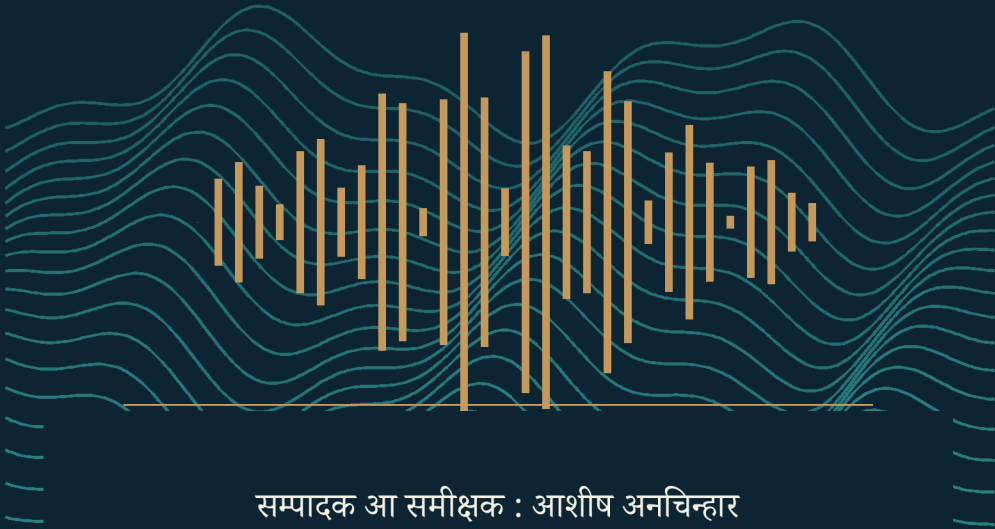
गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५३

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

कथासंसारक पुनर्परीक्षण

लेखन, सामाजिक यथार्थ आ इतिहास



सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५३

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

कथा-संसार, साहित्यिक मौन आ समानान्तर लेखन

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

पाठाधार आ आलोचनात्मक पद्धति

“नित नवल सुभाष चन्द्र यादव” गजेन्द्र ठाकुरक विस्तृत आलोचनात्मक पुस्तक अछि, जाहिमे १९८३क ‘घरदेखिया’ सँ २०२२क ‘भोट’ धरि कृतिक प्रकाशित क्रम, राजकमल चौधरीक मोनोग्राफ आ ‘राइटर्स ब्लॉक’क तर्क प्रस्तुत अछि। संलग्न मूल .doc फाइलकें केवल अध्ययन हेतु DOCX रूपमे पढल गेल; मूल पाण्डुलिपि यथावत् अछि।

एहि अध्ययनमे प्रकाशित मूल पुस्तकक कथन-प्रकार अलग-अलग राखल गेल अछि: लेखकक कृति-तिथि, स्रोतक उद्धृत कथा-दृश्य, संस्थागत आरोप, आ विश्लेषणात्मक अवधारणाक प्रयोग। मौलिक कथा-संग्रह आ उपन्यासक स्वतंत्र संस्करण सभ एहि स्रोतसंग पूर्ण रूपेँ संलग्न नहि; तें मूल समीक्षकक कथा-उदाहरणक स्वतन्त्र पाठ-प्रमाणिकता निश्चित कहबाक सीमा अछि।

अध्ययनक मूल अनुक्रम

- 01 — घरदेखिया : पहिल चरणक कथा आ सामाजिक विकल्प
- 02 — बनैत बिगड़ैत : पुनरागमन आ कथाक संरचना
- 03 — गुलो : श्रम, संपत्ति आ स्थानीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था
- 04 — रमता जोगी : यात्रा आ सामाजिक सम्बन्ध
- 05 — मडर : पुरुष-संशय, स्त्री-श्रम आ अपराधक आख्यान
- 06 — भोट : निर्वाचनक कथा, जनमत आ नाटकीय संरचना
- 07 — नित नवल राजकमल : आलोचकक साहित्येतिहास
- 08 — लेखन-अवरोध आ विदेह आन्दोलनक वैचारिक रूपक

01 घरदेखिया : पहिल चरणक कथा आ सामाजिक विकल्प

“नित नवल सुभाष चन्द्र यादव”क मूल परिचय अनुसार ‘घरदेखिया’ १९८३क रचना अछि। एहिसँ कथाकारक साहित्यिक यात्राक पहिल चरण चिन्हित कएल गेल अछि, जकर बाद दीर्घ प्रकाशकीय अन्तरक विषय पुस्तकक केन्द्रीय विमर्श बनैत अछि। एक रचना द्वारा आरम्भ भेल यात्रा साहित्येतिहासक तथ्य रूपेँ उपयोगी अछि, मुदा एही आधारपर अन्य समकालीन कथाकारक योगदान घटायब उचित नहि।

घरदेखियाक साहित्यिक मूल्यांकन कथानकक वस्तुगत गठन, विवाह-संस्था, निर्णयाधिकार, ग्रामीण अर्थव्यवस्था आ कथावाचकक स्वरतत्त्वकेँ मूल पाठसँ देखने होयत। स्रोत आलोचनामे व्यापक सामाजिक-सिद्धान्तक दावाक बीच वास्तविक पात्रक क्रिया आ अन्तिम निर्णयक उद्घरणक पञ्जी आवश्यक अछि। प्रथम संस्करणक पहचान, रूपान्तर आ प्रकाशित पाठक भेद सत्यापित भेला पर १९८३क कथा आ आगामी संकलनक तकनीकक तुलनात्मक परीक्षण अधिक भरोसेमन्द बनत।

02 बनैत बिगड़ैत : पुनरागमन आ कथाक संरचना

मूल पोथी 'बनैत बिगड़ैत' केँ २००८-०९क विदेह धारावाहिक प्रकाशन आ २००९क पुस्तकाकार रूपसँ जोड़ैत अछि। एहि प्रकाशन-संदर्भसँ साहित्यिक सार्वजनिकताक नूतन माध्यम आ कथाकारक पुनरागमनक प्रश्न खुलैत अछि। धारावाहिक पाठ आ पुस्तक-रूपक बीच कथात्मक आवर्तन, अध्यायक्रम, पाठ-संपादन आ भाषा-संशोधनक वास्तविक मिलान आवश्यक अछि।

'बनैत' आ 'बिगड़ैत'क विरोध पात्र, परिवार आ समाजक अस्थिरता संकेत करैत अछि, मुदा शीर्षकसँ सम्पूर्ण कथाक निष्कर्ष निकालब आलोचनात्मक जल्दबाजी होयत। स्रोतक रचना-पाठक घटना-विन्यास, अनिश्चित निर्णय आ संवादक लोकप्रयोगपर आधारित अलग अध्ययन कृतिक वैशिष्ट्य सिद्ध करबाक सही पद्धति अछि।

लेखकक दीर्घ मौनकेँ कथामे निहित कलात्मक तत्त्वक प्रत्यक्ष कारण बनाबयब जरूरी नहि; प्रकाशित रचना स्वयं ओकर शिल्पक प्रमाण अछि।

03 गुलो : श्रम, संपत्ति आ स्थानीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था

‘गुलो’ सम्बन्धी मूल आलोचनामे भूमि, परिजनक स्वार्थ, कागजी स्वामित्व, स्थानिक आर्थिक व्यवहार आ चुनावी प्रसंग पसरल अछि। महिनदर द्वारा घराडी लिखाएबाक प्रसंग सन कथा-साक्ष्य पात्रक बीच भरोसा आ ठगि-कर्मक सांस्कृतिक अर्थ स्पष्ट करैत अछि। एहि तरहक विशेष घटना साहित्यिक बहसकें अमूर्त सामाजिक आरोपसँ मुक्त कऽ कथाक ठोस धरातलपर अनैत अछि।

गामक भूमि-विवाद आ सार्वजनिक चुनावक समान उपस्थिति एक गहीर सामाजिक प्रश्न रचैत अछि: घरेलू विश्वासक हानि सार्वजनिक लोकतान्त्रिक भरोसाकें कोना प्रभावित करैत अछि? मुदा उपन्यासक कोनो एक पात्रक चुनावी व्यवहारसँ वास्तविक समकालीन राजनैतिक दल अथवा सम्पूर्ण समुदायक चरित्र निष्कर्षित करब उचित नहि।

रचना-शिल्पक परीक्षणमे कथावाचकक समय-परिवर्तन, संवादमे ग्रामीण शब्द, अध्याय-अन्तक गतिक सीमा आ पात्रक स्वतन्त्र विरोधी तर्क विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

04 रमता जोगी : यात्रा आ सामाजिक सम्बन्ध

‘रमता जोगी’ पुस्तकक २०१९क प्रकाशित कृतिक रूपमे मूल कृतिपञ्जीमे उपस्थित अछि। चलनशीलता आ आत्मीय सम्बन्धक संकेत शीर्षकमे अछि, मुदा वास्तविक कथानकक निश्चित सामाजिक अर्थ केवल शीर्षकसँ निर्धारित नहि कयल जाय। आलोचनाक पहिल प्रश्न पात्रक यात्रा-कथन, स्थिर ठामसँ अलग अनुभव आ घटनाक क्रमक अध्ययन अछि।

“नित नवल”क मूल पुस्तक एहि रचनाकेँ लेखकक पुनरारम्भित साहित्यिक जीवनमे स्थान दैत अछि। लेखकत्वक दीर्घ यात्रा उपयोगी पार्श्वकथा अछि, मुदा ‘रमता जोगी’क स्वतन्त्र उपलब्धि ओकर पात्रगत भाषा, बाहरी स्थान आ अन्तर्मनक संगति द्वारा प्रमाणित होयत।

एके लेखकक पूर्व रचना ‘बनैत बिगडैत’सँ तुलना करैत कथाकारक शैलीक विकासक दावा तखने उचित जखन दू कृतिक समांतर साक्ष्य प्रस्तुत कएल जाय।

05 मडर : पुरुष-संशय, स्त्री-श्रम आ अपराधक आख्यान

स्रोत-अध्ययन 'मडर'क मूल संघर्ष मदनक शंका, राधाक सिलाइ द्वारा परिवारक भरण-पोषण, बेटी शनिचरी आ हत्या सम्बन्धी कथाविन्याससँ जोड़ैत अछि। ई विवरण तत्कालीन लैङ्गिक श्रमक असमानता आ घरक भीतर हिंसाक प्रश्न खोलैत अछि। राधाक श्रमकें केवल पृष्ठभूमि मानल जाए तँ कथाक सामाजिक अर्थक पैघ हिस्सा छूटि जायत।

कथानकक हत्या अथवा अपराध पात्रगत घटना अछि; एकरा लेखकक व्यक्तिगत जीवन अथवा वास्तविक आपराधिक आरोपक सहसंबंध बनाबयब अनुचित। साहित्यिक हिंसाक आलोचना न्याय, कारण, नैतिक दुविधा आ कथावाचकक अविश्वसनीयतापर केन्द्रित रहबाक चाही।

मदनक शंका पात्रक मनोवैज्ञानिक असफलताक कथात्मक साधन भऽ सकैत अछि; मुदा कोनो नैदानिक मनोविकारक चिकित्सीय नाम बिना साक्ष्य देब समीक्षाक दायरा बाहर अछि।

06 भोट : निर्वाचनक कथा, जनमत आ नाटकीय संरचना

‘भोट’ (२०२२) सम्बन्धी मूल आलोचनामे यदुवंश कुमार यादव, चुनावी गठबंधन आ पिपरा विधानसभाक कथात्मक प्रसंग सामने अबैत अछि। स्रोत ईहो बतबैत अछि जे कथावाचक आ यदुवंशक रिश्ताक रहस्य पछाति खुलैत अछि। एहि विलम्बित उद्घाटनसँ चुनावी आख्यानमे व्यक्तिगत निकटता आ सार्वजनिक निष्पक्षताक तनाव साहित्यिक उपकरण बनि उठैत अछि।

चुनावी पात्र अथवा काल्पनिक घटना पर आधारित कथाकें वास्तविक निर्वाचनक तथ्य-विवरणसँ स्वतः मेल कराएब उचित नहि। साहित्यिक राजनीति जँ सचमुच सार्वजनिक इतिहासक घटनाक संकेत करैत अछि तँ समय, दल आ स्थानक बाहरी स्रोतद्वारा मिलान आवश्यक अछि।

लोकक पैसा, वचन आ भोटक बीच सम्बन्धक कथा-गत घटनासभकें प्रत्यक्ष दृश्य द्वारा परखब चाही। लोक-स्वर, व्यंग्य आ संवादक असमानता मूल रचनाक स्वतन्त्र काव्यात्मकता बनबैत अछि।

07 नित नवल राजकमल : आलोचकक साहित्येतिहास

सुभाष चन्द्र यादव पर केन्द्रित पुस्तकमे 'नित नवल राजकमल'क प्रसङ्ग अलग बौद्धिक मोड़ बनैत अछि। मूल कृतिपञ्जी राजकमल चौधरी सम्बन्धी मोनोग्राफक पूर्व सम्पादकीय इतिहास आ पछातिक पुस्तकाकार प्रकाशनक विवरण दैत अछि। एहि स्थितिमे साहित्यिक इतिहासक पाठ-साक्ष्य, मूल संस्करणक तिथि आ प्रकाशित पाठक सम्पादकीय अन्तर शोधक विषय छथि।

पुस्तकमे एक संस्थाद्वारा पाण्डुलिपि अस्वीकृतिक कथा उल्लिखित अछि। एहन सार्वजनिक-संस्थागत दावा केवल लेखकक स्मृति मानि निष्पक्ष तथ्य निश्चित नहि; सम्बद्ध पत्राचार, समिति-विवरण आ अन्य पक्षक प्रतिवचन जाँचबाक आवश्यकता अछि।

राजकमल चौधरीक साहित्यिक पुनर्पाठ एक लेखकक प्रतिमा बढेबाक कार्य नहि; कविता, कथा, उपन्यास, पत्रकारिता आ भाषा-चिन्तनक मूल स्रोत जाँचबाक पद्धति अछि।

08 लेखन-अवरोध आ विदेह आन्दोलनक वैचारिक रूपक

“राइटर्स ब्लॉक”क प्रश्न पुस्तकक मूल उपशीर्षकमे अछि। आलोचक साहित्यिक संस्थासँ अपेक्षित मान्यता नहि भेटबाक अनुभवकेँ दीर्घ लेखन-विराम आ पछाति विदेह प्रकाशनक सम्बन्धमे रखैत छथि। ई ऐतिहासिक सम्भावना विचारणीय अछि, मुदा लेखकक रचनाक दीर्घ अन्तरक मनोवैज्ञानिक कारणक निर्णायक निदान लेखकक प्रत्यक्ष कथन आ प्रकाशन अभिलेखक बिना सम्भव नहि।

पुस्तकक पूर्वाधमे ‘स्वप्नसुन्दरी’क चिड़ै आ गाछक कहानीकेँ साहित्यिक पुनरुत्थानक रूपक बनाओल गेल अछि। एकर बिम्बात्मक शक्ति स्पष्ट अछि: सामाजिक संस्कृति लोकक सामूहिक परिश्रमसँ बनैत अछि। मुदा कथा-रूपक ऐतिहासिक प्रमाणक विकल्प नहि।

“गैसलाइटिंग” सन आधुनिक अवधारणाक प्रयोगमे शब्दक सटीक अर्थ, संस्थागत पद्धति आ व्यक्ति-विशेषक प्रत्यक्ष व्यवहारक प्रमाण अलग करब चाही। विवादित कथनकेँ प्रत्यक्ष उपचारात्मक वा कानूनी निदानक रूपमे रूपान्तरित नहि कयल जाय।

समग्र मूल्याङ्कन

“नित नवल सुभाष चन्द्र यादव” साहित्यिक रचनाक इतिहासकें प्रकाशन-संस्था, सामाजिक प्रतिनिधित्व आ लेखकक सार्वजनिक मौनसँ जोड़ैत अछि। एहि आधारपर ‘बनैत बिगड़ैत’, ‘गुलो’, ‘मडर’ आ ‘भोट’क सामाजिक सामग्रीक अलग पाठ सम्भव अछि।

मूल आलोचकक समानान्तर साहित्य-प्रतिज्ञाकें स्वीकार वा अस्वीकार करबाक बदला घटनागत पात्र-साक्ष्य, कालक्रम, प्रकाशन इतिहास आ विचारधारात्मक रूपकक अन्तर बचाएब आलोचनाक मुख्य उद्देश्य रहल। पुस्तकक सबसे शक्तिशाली स्थान ओतय अछि जतय कथाक वास्तविक दृश्य सामाजिक तर्ककें जगबैत अछि, आ कमजोर स्थान ओतय जतय संस्थागत नीयत अथवा मनोवैज्ञानिक कारण अनुमानरूपमे निश्चित कयल जाइत अछि।

आगामी संशोधनीय संस्करणक लेल कृतिवार मूल पाठ, प्रथम संस्करण, सम्पादकीय पत्राचार आ सार्वजनिक इतिहासक सत्यापित पञ्जी जोड़ल जाए तँ ई साहित्यिक पुनर्मूल्यांकन अधिक सुदृढ होयत।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। नित नवल सुभाष चन्द्र यादव। संलग्न मूल Microsoft Word संस्करण; प्रकाशन-विवरण आ सम्पूर्ण समीक्षात्मक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ५३

घरदेखिया सँ भोट धरि कथाक
विकास, पात्र-शिल्प आ भाषा;
लेखन-अवरोध आ साहित्यिक संस्थाक
भूमिका सम्बन्धी तर्कक परीक्षण;
समानान्तर इतिहासक आलोचना।

विदेहक मूल साहित्यिक अभिलेख



www.videha.co.in



[GitHub Videha Archive](#)

मूल लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

छओ बाइ नौ इञ्च — विदेह